साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से परिसंवाद आयोजित

सामाजिक सरोकार विषय पर ऑनलाइन के माध्यम से एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन करते हुए नई दिल्ली के उपसचिव डा. सुरेश बाबू व अन्य।

जम्मू, 19 मई (सवेरा) : साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से वैबलाइन साहित्य श्रृंखला के तहत डोगरी साहित्य में सामाजिक सरोकार विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्र म की शुरु आत साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उपसचिव डा.सुरेश बाबू के अभिनंदन भाषण से हुई। डोगरी, उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार तथा देश-विदेश में अपनी विशेष पहचान रखने वाले वरिष्ठ साहित्यकार, डोगरी भाषा के कन्वीनर जनाब दर्शन दर्शी (डी.के. वैद साहिब) ने अपने परिचयात्मक भाषण में कहा कि भले ही पूरा विश्व समान परिस्थितियों से जूझ रहा है फिर भी डुग्गर प्रदेश अलग से कुछेक सियासी, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में पिस रहा है। उन्होंने पूरे विश्व तथा भारत के साहित्य में सामाजिक सरोकारों का हवाला देते हुए कहा कि डोगरी साहित्य भी ऐसी ही त्रासदियां से भरा हुआ है जिनका विवरण हमारे पत्रवाचक, अगले पत्रवाचन सत्र में देंगे।

डोगरी भाषा के जाने-माने लेखक जनाब शिवदेव सिंह सुशील ने अपने भाषण में कहा कि दशकों से डोगरा समाज विशिष्ट होने पर भी निकृष्ट श्रेणी की ओर धकेला जा रहा है, फिर भी डोगरा समाज देश भक्ति का झंडा उठाए सबसे अगली पंक्ति में खड़ा दिखाई देता है। अनेक प्रकार की सुविधाओं से वंचित यह समाज हर प्रकार की कुंठाओं को अपने भीतर दबाते हुए आज नहीं तो कल की रटना रटते, विवशता के कड़वे घूंट पीते हुए जीवन पथ पर अग्रसर है। साथ ही उन्होंने डोगरा समाज तथा डुग्गर प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य तथा अलंकृत बर्तमान की कामना की।

अपने अध्यक्षीय भाषण में विशिष्ट डोगरी लेखक माननीय प्रकाश प्रेमी ने जनाब शिवदेव सिंह सुशील, माननीय दर्शन दर्शी को बधाई देने के अलावा डोगरी साहित्य में सामाजिक सरोकारों पर खुलकर अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्र म के दूसरे सत्र में तीन पेपर पढ़े गए जिनमें पहला पेपर सीताराम सपोलिया ने डोगरी कविता में सामाजिक सरोकार के बारे में पढ़ा और कहा कि सभी कवियों ने समाज में फैली विसंगतियों से लेकर आध्यात्मिक विषयों तक अपने-अपने ढंग से टीका-टिप्पणी की हुई है।

सत्र में दूसरा पेपर श्री शंभुराम प्यासा ने डोगरी के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार पर पढ़ा जिसमें उन्होंने कहा कि कथाकारों ने समाज में व्याप्त अन्य विषयों के अलावा नारी उत्पीड़न पर खुलकर चर्चा की हुई है। कार्यक्र म में तीसरा पेपर डा.सुनीता भड़वाल ने डोगरी उपन्यासों में सामाजिक सरोकारों पर पढ़ा और कहा कि उपन्यासों में नारी वेदना के अतिरिक्त गरीब मार, राजनीतिक दांवपेंच, गांवों की बदहाली तथा आम जनता के दुख-दर्द आदि विषयों पर आम चर्चा पढ़ने में मिलती है। पत्रवाचन सत्र के प्रधान प्रख्यात डोगरी कवि, जनाब ज्ञानेश्वर शर्मा ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देने के अतिरिक्त अपनी ओर से भी डोगरी साहित्य में परिव्याप्त सामाजिक सरोकारों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। कार्यक्रम के अंत में दर्शन दर्शी ने अपनी ओर से तथा डा.सुरेश बाबू जी ने साहित्य अकादमी दिल्ली की ओर से सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।

अलग तरह की परिस्थितियों से जूझ रहा डुग्गर प्रदेश

साहित्य अकादमी ने करवाया डोगरी साहित्य में सामाजिक सरोकार पर परिसंवाद

जम्मू | स्टेट समाचार

साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से ऑनलाइन साहित्य श्रृंखला के तहत डोगरी साहित्य में सामाजिक सरोकार विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। डोगरी, उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार तथा देश-विदेश में अपनी विशेष पहचान रखने वाले वरिष्ठ साहित्यकार, डोगरी भाषा के कन्वीनर दर्शन दर्शी डीके वैद ने अपने परिचयात्मक भाषण में कहा कि भले ही पूरा विश्व समान परिस्थितियों से जूझ रहा है। फिर भी डुग्गर प्रदेश अलग से कुछेक सियासी, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में पिस रहा है। उन्होंने साहित्य में सामाजिक सरोकारों का हवाला देते हुए कहा कि डोगरी साहित्य भी ऐसी ही त्रासदियों से भरा हुआ है।

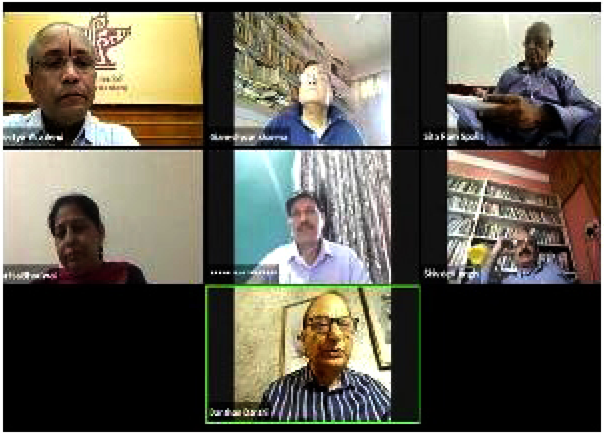

डोगरी साहित्यकार शिवदेव सिंह सुशील ने अपने भाषण में कहा कि दशकों से डोगरा समाज विशिष्ट होने पर भी निकृष्ट श्रेणी की ओर धकेला जा रहा है। फिर भी डोगरा समाज देश भक्ति का झंडा उठाए सबसे अगली पंक्ति में खड़ा दिखाई देता है। अनेक प्रकार की सुविधाओं से वंचित यह समाज हर प्रकार की कुंठाओं को अपने भीतर दबाते हुए आज नहीं तो कल की रटना रटते, विवशता के कड़वे घूंट पीते हुए जीवन पथ पर अग्रसर है। साथ ही उन्होंने डोगरा समाज तथा डुग्गर प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य तथा अलंकृत वर्तमान की कामना की। इससे पहले स्वागत भाषण साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उपसचिव डा. सुरेश बाबू कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह सभी कार्यक्रम जम्मू में तय थे लेकिन कोरोना हालात के चलते ऑनलाइन कार्यक्रम ही करने पड़ रहे हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में विशिष्ट डोगरी लेखक प्रकाश प्रेमी ने शिवदेव सिंह सुशील, दर्शन दर्शी को बधाई देने के अलावा डोगरी साहित्य में सामाजिक सरोकारों पर खुलकर अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में तीन पेपर पढ़े गए। जिन में पहला पेपर सीताराम सपोलिया ने डोगरी कविता में सामाजिक सरोकार के बारे में पढ़ा। उन्होंने कहा कि सभी कवियों ने समाज में फैली विसंगतियों से लेकर आध्यात्मिक विषयों तक अपने-अपने ढंग से टीका-टिप्पणी की हुई है। सत्र में दूसरा पेपर शंभु राम प्यासा ने डोगरी के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार पर पढ़ा। जिस में उन्होंने कहा कि कथाकारों ने समाज में व्याप्त अन्य विषयों के अलावा नारी उत्पीड़न पर खुलकर चर्चा की हुई है। कार्यक्रम में तीसरा पेपर डा. सुनीता भड़वाल ने डोगरी उपन्यासों में सामाजिक सरोकारों पर पढ़ा। उन्होंने कहा कि उपन्यासों में नारी वेदना के अतिरिक्त गरीब मार, राजनीतिक दांवपेंच, गांवों की बदहाली तथा आम जनता के दुख-दर्द आदि विषयों पर आम चर्चा पढ़ने में मिलती है। पत्रवाचन सत्र के प्रधान प्रख्यात डोगरी कवि, ज्ञानेश्वर शर्मा ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देने के अतिरिक्त अपनी ओर से भी डोगरी साहित्य में परिव्याप्त सामाजिक सरोकारों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। कार्यक्रम के अंत में दर्शन दर्शी ने अपनी ओर से तथा डा. सुरेश बाबू ने साहित्य अकादमी दिल्ली की ओर से सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।

आनलाइन परिसंवाद में डुग्गर साहित्य पर डाली रोशनी

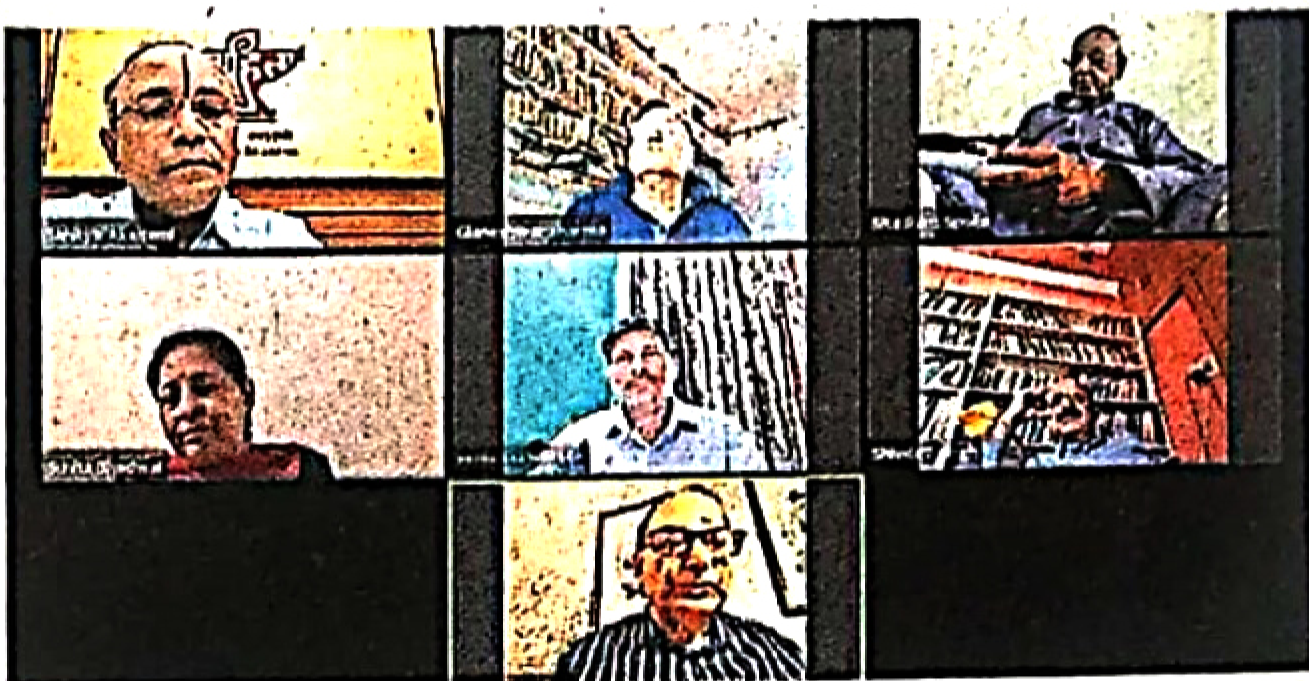

आनलाइन परिसंवाद में भाग लेते डोगरी साहित्यकार • इंटरनेट मीडिया

जागरण संवाददाता, जम्मू : साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से आनलाइन साहित्य श्रृंखला के तहत डोगरी साहित्य में सामाजिक सरोकार विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। डोगरी, उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं पर पूर्ण अधिकार तथा देश-विदेश में अपनी विशेष पहचान रखने वाले वरिष्ठ साहित्यकार, डोगरी भाषा के कन्वीनर दर्शन दर्शी डीके वैद ने अपने परिचयात्मक भाषण में कहा कि भले ही पूरा विश्व समान परिस्थितियों से जूझ रहा है, फिर भी डुग्गर प्रदेश अलग से कुछ सियासी, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में पिस रहा है। उन्होंने साहित्य में सामाजिक सरोकारों का हवाला देते हुए कहा कि डोगरी साहित्य भी ऐसी ही त्रासदियों से भरा हुआ है।

डोगरी साहित्यकार शिवदेव सिंह सुशील ने कहा कि दशकों से डोगरा समाज विशिष्ट होने पर भी निकृष्ट श्रेणी की ओर धकेला जा रहा है, फिर भी देश भक्ति का झंडा उठाए सबसे अगली पंक्ति में खड़ा दिखाई देता है। सुविधाओं से वंचित यह समाज अपनी आवाज उठा रहा है।

साहित्य अकादमी ने डोगरी साहित्य और सामाजिक सरोकार विषय पर करवाया वैबीनार

नई दिल्ली, 19 मई (बलविंदर सिंह सोढी): साहित्य अकादमी के द्वारा ऑनलाइन वैबीनार करवाया गया, जिसका विषय डोगरी साहित्य और सामाजिक सरोकार था। इसकी शुरुआत डा. एन.सुरेश बाबू (डिप्टी सचिव) ने की। उन्होंने कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसमें उसका पोषण होता है और उसमें से वह अपनी मानसिक खुराक लेता है। डोगरी सलाहकार बोर्ड के संरक्षक दर्शन दर्जी ने कहा कि समाज के बिना साहित्य पैदा नहीं होता और बिना साहित्य के उससे समाज की गतिविधियों के बारे नहीं जाना जा सकता। इसके अलावा रामनाथा शास्त्री, मदनमोहन शर्मा, पदमा सचदेवा ने अपने विचार रखे। दूसरे सैशन में विशेष मेहमान ज्ञान सवर (डोगरी भाषा के सलाहकार बोर्ड के सदस्य) थे। इसमें सीता राम सपोलिया, शंभु राम, सुनीता ने पेपर पढ़े। अंत में साहित्य अकादमी के डिप्टी सचिव डा. एन.सुरेश बाबू ने सबका धन्यवाद किया।